संगम Impact Factor : 4.553 Website : www.ginajournal.com ISSN : 2321-8037
SANGAM
A Peer Reviewed International Refereed Journal विशेषांक–समकालीन हिन्दी साहित्य और विमर्श Vol. 11, Issue 4
गीना देवी शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित साहित्य, शिक्षा, संस्कृति एवं शोध को समर्पित मासिक

Page No. 779-783

डॉ. ताराषंकर शर्मा 'पाण्डेय' की कृतियों में नारी विमर्ष

प्रस्तौता –प्रियंका शर्मा

विषय : संस्कृत

कोटा

डॉ. ताराशंकर शर्मा 'पाण्डेय' की कृति 'सारस्वत–सौरभम्' के 'किं चतुष्कम्' खण्ड की चार मुक्तक कविताओं में डॉ. पाण्डेय ने समसामयिक बिन्दुओं का स्पर्श किया है। शनैः शनैः कवि हृदय ने जैसे–जैसे समाज को निकट से देखा वैसे ही उसे समाज की अनेक विकृतियाँ झकझोरने लगी। समाज में बढ़ती हुई विसंगतियों को उठाते हुए समाज में स्त्री की दुर्दशा को देखकर कवि हृदय व्यथित होकर व्यंग्यात्मक शैली में समाज से अनेक प्रश्न करता है।

विवाह मानव जीवन को ईश्वर प्रदत्त अनमोल देन है। किन्तु वर्तमान समाज में लोगों में निरन्तर बढ़ रही अर्थलोलुपता तथा विलासी प्रवृत्ति ने इस पावन व धार्मिक परम्परा को भी कलुषित कर दिया है। इस कुप्रथा के कारण कभी जो नारी देवता तुल्य पूजनीय मानी जाती थी आज के धन के लोभ में आकर अनेक अपशब्द, संज्ञाओं से अभिहित कर प्रताड़ित की जा रही है। 'यौतुक–प्रथा' कौढ़ की तरह समाज में फैलती जा रही है। जिसके भयंकर दुष्परिणाम सामने आ रहे हैं। कवि प्रश्नानुप्रश्न की शैली में 'दहेज' जैसी विकट समस्या पर व्यंग्यात्मक शैली में प्रश्न उठाते हुए कहता है–

"किं नामधेयं यौतकम्

किं नित्योपयोगि वस्तु

गेहे तव पूर्वमस्तु।

नास्ति चेत् कुरु प्रयत्नं

पौरुषं किं ते सपत्नम्।।"[1]

कवि यहाँ नारी उत्पीड़न से व्यथित होकर समाज के समक्ष अनेक जीवन्त प्रश्नों को उपस्थित कर सामाजिक चेतना जाग्रत करना चाहते हैं। वे कहते हैं कि नारी का मूल्यांकन उसके गुणों के आधार पर किया जाता है न कि दहेज से, उनकी दृष्टि में दहेज युक्त निर्गुण नारी सर्वथा व्यर्थ है यथा–

"लज्जाऽऽभरण–भूषिता

प्रसन्ना भवेद् भूषिता।

गुरुशुश्रुषाऽऽ–चरणा

कान्तानुसारिचरणा।।

एवं गुणगणग्रथिता नास्ति चेत्

व्यर्थ ते सयौतकम् यौवतम्।

किं नामधेयं यौतकम्?"[2]

यौतुक प्रथा पर प्रश्न उठाने वाली 'परकीयधनम्' मुक्तक कविता में कवि ने यौतुक की तुलना राक्षस से की है–

"यौतुकयातुधानैर्विहितदुर्दशं तद्धनं।"[3]

कवि वर्तमान परिवेश में व्याप्त 'यौतुकप्रथा' के कारण नारी दुर्दशा पर चिन्ता व्यक्त करते हुए 'परकीयधनम्' कविता के माध्यम से समाज को यह सन्देश प्रदान कर जागरुकता उत्पन्न करना चाहते है कि किसी भी सामाजिक को अपनी पुत्री को परकीय धन के रूप में प्रदान करने से पहले दहेज रूपी राक्षस पर भली–भाँति विचार कर लेना चाहिए तथा अत्यन्त सोच विचारपूर्वक ही कन्या रूपी धन को परकीय धन के रूप में प्रदान करना चाहिए।

"तत्पुनः

गृहस्थः/सामाजिक प्राणी

परकीयं किन्तु ममत्वेन नैजं

यौतुकयातुधानै र्विर्हित दुर्दशं तद्धनं
विलोक्य तादृशं दुःखमनुभवतृि
यस्यानुमानं तु ज्ञानी कण्वोऽपि कर्तुं न पारयतिस्म
परन्तु सावधान मनसो भवन्तु ते
ममत्वप्रदातृ परकीयं धनम्।।"[4]

समाज में बढ़ती हुई विसंगतियों को उठाते हुए समाज में स्त्री की दुर्दशा को देखकर कवि हृदय पुकारता है कि 'कोऽयं तस्य अपराधः'। हमारे समाज में यदि आज भी किसी नववधू के गर्भ से निरन्तर ही कन्या सन्तति उत्पन्न होती है तो उसका घर एवं समाज में तिरस्कार होता है। यहाँ तक कि उसे अनगिनत यातनाऐं दी जाती है। अतः कवि समाज के इस अपराध से दुःखित होते हुए समाज से प्रश्न करता है कि इसमें उसका क्या अपराध है–

"पुत्रं यदि सा न सूते
बालिकाततिञ्च तनूते
भाग्याधीना किं कुरुते
तदपि सापराधां मनुषे।।
तदा व्यर्थ तवाक्षेपः मार्गों नियतेरबाधा
कोऽयं तस्या अपराधः?।।"[5]

स्त्री–पुरुष के भेद के कारण वर्तमान में मनुष्य शिक्षित होते हुए भी अपने आपको कन्या–भ्रूण हत्या रूपी पाप के दलदल में धकेलता जा रहा है। इस तरह के कुकृत्य ने सम्पूर्ण मानव जाति को कलंकित कर दिया है। ऐसा कलंक जो मानव के दुष्कृत्यों तथा अन्याय की पराकाष्ठा का सूचक है। कन्या–भ्रूण हत्या के लिए भी 'दहेज प्रथा' जैसी सामान्य बुराई को उत्तरदायी माना जा सकता है। क्योंकि गरीब माता–पिता दहेज देने के भय से कन्या के जन्म को अपशकुन समझने लगते हैं और उन्हें जन्म से पूर्व ही कोख में समाप्त कर दिया जाता है।

जहाँ पहले सामाजिक जीवन में नारी के विषय में कहा जाता था कि 'नाना नार्या निष्फला लोकयात्रा' अर्थात् नारी के बिना लोक यात्रा निष्फल है उसी आदर्श की मूर्ति नारी का वर्तमान समाज में जो अपमान हो रहा है। वह निश्चय ही निन्दनीय है। जीवन संघर्षों में परिपातित व

आपदाओं की अग्नि में तापित नारी जीवपन की कहानी मैथलीशरणगुप्त जी शब्दों में यूँ व्यक्त करते हैं–

"अबला जीवन हाय तुम्हारी यही कहानी
आँचल में है दूध और आँखों में है पानी।।"

प्रसाद जी ने नारी की सुन्दर अभिव्यक्ति प्रस्तुत की है–

"यह आज समझ तो पायी हूँ,
मैं दुर्बलता की नारी हूँ।
अवयव की सुन्दर कोमलता
लेकर मैं सबसे हारी हूँ।।"

नारी स्वभाव से सहनशील होती है। आरम्भ में वह ही प्रसव पीड़ा को सहन करती है अन्त में भी अपने ऊपर अत्याचारों को सहन करती है। इसी भाव से व्यथित डॉ. पाण्डेय ने कहा है कि ग्राम से नगर तक नारी के प्रति जो सम्मान और आदर्श होना चाहिए वह उसे सुलभ नहीं है। पुत्र देने वाली नारी का सम्मान है और कन्या सन्तति वाली का अपमान है। यह विसंगति समाज के लिए कौढ़ है। सभ्य समाज भी इस कदाचरण से अछूता नहीं है। अतः कवि ने एक ओर जहाँ समाज में नारी की अवमानना का चित्रण किया है तो दूसरी ओर कन्या सन्तति भी पुत्र के समान ही कल्याणकारी है यह कहकर पुत्र व पुत्री दोनों को समान समझने का संदेश प्रदान कर समाज में जागरुकता लाने का प्रयास किया है यथा–

"अग्रिमा नास्ति किमघ नारी
नर एव किं कल्याणकारी
बालिकाऽपि धत्ते पुत्रं साम्यं
मोदस्व तवेदं महद्भाग्यम्।।"[6]

स्त्री–पुरुष को समान समझने का सन्देश प्रदान कर अंत में कवि ने राष्ट्रहित में 'परिवार कल्याण' सीमित परिवार को अपनाने का सन्देश प्रदान करते हुए कहा है कि–

"तत्स्वीकुरु निरोधम्, क्व वा रोधः विधेरविधरगाधः कोऽयं तस्या अपराधः?"[7]

प्राचीनकाल में निरपराध होते हुए भी अबला नारी पर जो अत्याचार किए जाते थे वे आज भी शिक्षित समाज में उसी रूप में बने हुए हैं अतः समाज की इस अवस्था से दुःखित होकर डॉ. पाण्डेय नारी दशा के उत्थान के लिए समाज को जागरुक बनाना चाहते है। समाज में नारी की महत्ता को गौरवान्वित कर समाज में नारी उत्थान के प्रति चेतना जागृत करते हुए समाज में स्त्री के प्रति पूजनीय भाव होना चाहिए।

♦♦♦♦

संदर्भ सूची

1. सारस्वत–सौरभम्, पृ.सं.–35
2. सारस्वत–सौरभम्, पृ.सं.–35
3. सारस्वत–सौरभम्, पृ.सं.–24
4. सारस्वत–सौरभम्, पृ.सं.–24
5. सारस्वत–सौरभम्, पृ.सं.–36
6. सारस्वत–सौरभम्, पृ.सं.–36
7. सारस्वत–सौरभम्, पृ.सं.–36